माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के

26वें दीक्षान्त समारोह में उद्बोधन

स्थान :- जबलपुर दिनांक :- 2 नवम्बर, 2012 समय :- प्रात: 10-30 बजे

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह में आयोजित दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित होकर मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। यह गौरव भाव इसलिए नहीं है कि मैं दीक्षान्त समारोह में आया हूं बल्कि इसलिए है कि आज मैं स्वर्ण पदक प्राप्त छात्रों के स्वर्ण-आभा से प्रदीप्त, उल्लासित चेहरों को देख रहा हूँ। यह प्रेरणा के साथ एक उत्तरदायित्व का अवसर है। दीक्षान्त शिक्षा का अन्त नहीं आरम्भ है।

आपकी डिग्री की शिक्षा का अन्त हुआ है, लेकिन आप अब वृहद क्षेत्र में उतर रहे हैं। वह है सामाजिक दायित्व का क्षेत्र। शिक्षा प्राप्त करने के दौरान जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका समाज की उन्नति में प्रयोग ही दीक्षान्त है। यहाँ से स्व-उन्नति के साथ समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में आप लगेंगे। यह खुशी और भविष्य की जिज्ञासाओं का मिला जुला स्वर्णिम अवसर है। अपनी अभिलाषाओं के अनुसार आपको अपना भविष्य संवारने का पूरा अधिकार है, साथ-साथ विश्वविद्यालय से निकलने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को अपने राष्ट्र के लिए समर्पित होना होगा।

जिस शिक्षा, संस्थान, समाज और गुरूओं ने आपकी प्रतिभा को हीरे की तरह बारीक एवं मूल्यवान समझकर तराशा है, उस संस्थान के प्रति, उस समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होनी चाहिए। यह ऋषि ऋण है। हमारे देश में प्राय: मातृ ऋण, पितृ ऋण की बात होती है। आप अपने परिवार एवं वंश वृद्धि मुक्ति पाने का मार्ग खोजते हैं, लेकिन ऋषि ऋण पर कम ध्यान दिया जाता है। शिक्षा का सदुपयोग समाज हित में करके आप ऋषि ऋण से मुक्त हो सकते हैं। यही दीक्षान्त का संदेश है।

छान्दोग्योपनिषद् का एक श्लोक है :

अथ उत्थाता भवति,श्रोता भवति, द्रष्टा भवति।

मन्ता भवति, ज्ञाता भवति, विज्ञाता भवति।।

अर्थात् उठने वाला बनो, उठकर चलने वाला बनो, चलकर पास तक पहुंचो, श्रोता बनो दर्शक बनो, मनन करो, फिर विशेष ज्ञानवान बनने के लिए उठना होगा, चलना होगा, श्रोता बनना होगा तब कहीं ज्ञान की सीमा में आप प्रवेश करेंगे।

ज्ञान बिना सरोकार के दिग्भ्रान्त करने वाला होता है। ज्ञानी की सार्थकता उस ज्ञान के सार्थक प्रसार, विस्तार एवं प्रयोग में है। आप सभी दीक्षार्थियों से अपेक्षा है कि आप स्वयं में इतने प्रकाशवान बनें कि आपके आस-पास किसी प्रकार की संकीर्णता का अंधेरा भटकने न पाए। अप्प दीपो भव:। स्वयं दीपक बनो, जो समाज में शिक्षा, संस्कार एवं ज्ञान का उजाला फैलाए। पढ़ा-पढ़ाया कुछ अंश तक पथ-प्रदर्शक होता है लेकिन, सच्चा पथ-प्रदर्शक समुद्र में प्रकाश स्तम्भ की तरह होता है। सत्यवादी और राष्ट्रभक्तों की शिक्षा को मानें। चाहे वे जीवित है अथवा नहीं। 21वीं शताब्दी में शिक्षा ने नए आयाम छुए हैं। परिवर्तन, तकनीकी ही नहीं मानवीय एवं बौद्धिक अधिक है।

मैं बार-बार महसूस करता हूं कि बौद्धिक एवं तकनीकी प्रगति में कहीं मानवीय संवेदना छूट न जाए। यह संवेदना ही आपको मनुष्य बनाए रखेगी, नहीं तो हम यंत्र की तरह निर्जीव हो जायेंगे।

मैं जबलपुर की धरा पर खड़ा हूं। यह देश का केन्द्र बिन्दु है। अनेक ऋषियों, मनीषियों, बलिदानियों की धरती है। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि मध्य प्रदेश भारत का गौरव प्रदेश है। मध्यप्रदेश प्राकृतिक संपदा के ईश्वरीय वरदान से अभिसिंचित है। नर्मदा, क्षिप्रा जैसी नदियाँ इस प्रदेश के चरण पखारती हैं। विंध्य की पहाड़ियां, सतपुड़ा के जंगल हरितिमा देते हैं। कालिदास, राजशेखर, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, आचार्य रजनीश, महर्षि महेश योगी, हरिशंकर परसाई, शिवमंगल सिंह सुमन की कर्मभूमि मध्यप्रदेश है। साथ ही यह भी तो सत्य है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग की जनसंख्या सर्वाधिक इसी प्रदेश में है।

21वीं सदी का उजाला उधर भी तो जाना है। शिक्षा के आलोक से ये वन प्रान्त के लोग क्यों वंचित हैं या यह सत्य है कि आज की शिक्षा इस वर्ग के लिए कोई आकर्षण पैदा नहीं करती। सरकार के अथक प्रयास अभी तक इस वर्ग को शिक्षा की मूल धारा में क्यों नहीं शामिल कर पाए।

यह प्रश्न आज का नहीं है शताब्दियों का है। हम सब को सोचना होगा कि वन प्रान्तों के लोग कैसे मुख्य धारा में शामिल हो। याद रखें कि हमारी शिक्षा यदि इस उद्देश्य में पिछड़ती है तो माफी शब्द का महत्व कम हो जायेगा।

आइए, हम संकल्प करें कि आप अपनी स्वर्ण पदकों की आभा उनको भी प्रकाशित करे। यह एक बड़ी शिक्षा है। मानवीय कोशिश है। आदिवासियों, अनुसूचित वर्ग में आत्मविश्वास जगाना आज के आयोजन का मुख्य ध्येय होना चाहिए। इसके लिए शिक्षा की संरचना में, पाठ्यक्रम में आमूल चूल परिवर्तन करना होगा। जो शिक्षा हमारी कृषि, अर्थव्यवस्था, पिछड़ेपन को न सुधार सके उसे बदलना ही चाहिए। आज युवा कृषि जैसे कर्म से अलग होना चाहता है। दूसरे की नौकरी करना चाहता है।

अपने धरती से पलायन करता है। यह यदि उच्च शिक्षा के इतने विस्तार के बाद भी हो रहा है तो कहीं न कहीं कमी है। अभी भी समय है।

मुझे बताया गया है कि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय का विस्तार सात जिलों जबलपुर, नरसिंहपुर, कटनी, बालाघाट, मंडला, डिण्डोरी, सिवनी तक है। ये अभी भी कृषि बाहुल्य एवं आदिवासी बाहुल्य जिले हैं।

इस क्षेत्र में लाखों के जीवन को उन्नत करने में शिक्षा एवं शिक्षकों का ज्यादा महत्व है। आज स्वर्ण पदक पाने वाले एवं अन्य उपाधिधारियों से मेरी अपील है कि आप अपने ज्ञान का, आय का, कर्म का कुछ भाग इस वर्ग के लिए रखें तभी यह दीक्षा सफल होगी।

अंत में एक बार पुन: मैं सभी विद्यार्थियों एवं मानद उपाधि पाने वालों को हृदय से बधाई देता हूं। रानी दुर्गावती उस महान बलिदानी का नाम है जिसने राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग किया। ऐसी महान विभूति के नाम पर बने इस विश्वविद्यालय की ख्याति राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर को स्पर्श करे, जिससे मैं भी गौरवान्वित हो सकूं।

मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षार्थी इस अपेक्षा को अवश्य पूर्ण करेंगे। यही वीरांगना रानी दुर्गावती को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आपके सुनहरे भविष्य की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

जय हिन्द